1997 = नंदिनी सम्मेलन

Ajay

समापन-सत्र

(२२/६/९७)

सत्र की शुरूआत में श्री सिन्धु जी, डा० सत्येन्द्र, श्रीमती चौधरी, श्रीमती द्विवेदी, श्रीमती नीला चन्द्राकर, श्री वर्मा जी, श्री त्यागी जी ने बाबा का स्वागत किया। चौधरी जी ने उद्बोधन में कहा कि इस बात से परेशान होने की आवश्यकता नहीं है कि इतने सालों में कुछ ज्यादा कर नहीं पा रहे हैं। स्वयं को निन्दित करने या दूसरों को निन्दित करने की आवश्यकता नहीं है। स्वमूल्यांकन की आवश्यकता है और इसके साथ दर्शन के लोक व्यापीकरण के लिए यथासंभव प्रयास करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मैं तो सिर्फ अपनी विशुद्ध शैक्षिक जिज्ञासा की पूर्ति के लिए पूज्य बाबा से जुड़ा था मगर स्वायत्त ग्राम स्वराज्य के बाबा के मॉडल ने मुझे अभिभूत कर दिया। इसके लिए हम सबको सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। जीवन विद्या को स्वयं में, परिवार में अनुभव करते हुए जीना सरल होता है। विद्या को समझने के साथ ही कुशलतापूर्वक रहने का अभ्यास हम सभी को करना होगा। पूरे मध्यस्थ दर्शन को स्वयं में महसूस करते हुए समझते जाना है। यही समझ की स्थिरता का आधार है।

बाबा के आदेश से चौधरी जी ने बताया कि किस प्रकार वे विद्या से परिचित हुए और मूल्यांकन के क्रम से गुजरते हुये किस प्रकार आगे बढ़े। बाबा के साहित्य लेखन में उन्होंने अपनी भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सही समझ कर सही समझाने की ईमानदार प्रक्रिया के बाद ही दर्शन का लोक व्यापीकरण किया जा सकता है।

बाबा ने बताया कि सही बात को किसी को समझने के लिये शर्म की, संकोच की जरूरत नहीं होती। बाबा ने बताया कि इतिहास में जिन्होंने भी अच्छे काम किये हैं, उन्होंने स्वयं उन्हें उद्घाटित नहीं किया है। जो नहीं कर पाये हैं, उन्हीं को उद्घाटित किया है, पारंपरिक भूल की यही आधार बना।

हर अच्छे काम स्वयं के द्वारा किये का संपूर्ण जिम्मेदारी पूर्वक उद्घाटन करना योग्य है। अच्छे काम को समझदारी, विचारशैली, कार्य को पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी पूर्वक दूसरों तक पहुंचाना हमारा दायित्व है। समझदारी पूर्ण होने पर समझदारी पूर्वक प्रस्तुत होना, व्यवहार करना होता ही है। यह स्वयं को तो तृप्त करता ही है। दूसरों को भी तृप्त करता है।

बाबा ने तीन शोध प्रबंधों (डा० पवित्र चौधरी, डा० रणसिंह आर्य एवं डा० के० बी० जार्ज द्वारा शोधित) की भी चर्चा करते हुए कहा कि जीवन के सभी आयामों को मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में मीमांसित करने की आवश्यकता है। शिव ने कहा कि समझने के बाद जीना होता है। जीने का अर्थ है बोलना और करना। बोलना मनुष्य के साथ और करना प्रकृति के साथ। तो सही बोलना और सही करना, सही समझने के बाद होता ही है। गलतियों का प्रकाशन बोलने का कोई वस्तु नहीं है।

श्री वानप्रस्थ जी ने बताया कि किस प्रकार से विद्या से परिचित हुए और विद्या के क्षेत्र में पारंगत होकर पूर्णतः समर्पित होने की इच्छा व्यक्त की।

श्री प्रेम सिंह ने कुछ बिन्दुओं पर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि जिन अपेक्षाओं को लेकर हम इस सम्मेलन में आये वे उनमें से कुछ पूरी हुयी हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जीवन विद्या समझने के बाद उसके अनुरूप ही करने की बात समझ में आती है। अन्य कार्यक्रम निकलता ही नहीं है। हम जो भी कर रहे हैं, वह स्वाभाविक रूप से बहने वाली क्रिया है। इसे विशिष्टता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। गुरुडम के लिए कोई स्थान नहीं है। जितना समझ में आता है, उतना-२ करना तो बनता ही है, पूर्णता का इंतजार नहीं करना पड़ता। साधना की परम्परागत विधियों से निरंतर सुख मिलता नहीं है। स्वयं व परिवार के प्रति आश्वस्त होकर जीना शुरू हो सके, यही शुभ है। विद्या के क्षेत्र में कौन पहले, कौन बाद में इस तरह से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्हें जो बात अच्छी नहीं लगती उनका भी उल्लेख किया। इसके बाद अपने परिवेशगत प्राकृतिक इकाईयों में सहअस्तित्व व पूरकता विधि से जाग्रत होना होगा। प्रबुद्ध व्यक्तियों से मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

बाबा ने प्रेम सिंह की दुविधा को स्पष्ट किया।

बागड़िया जी ने कहा कि स्वयं में व्यवस्था और सम्पूर्ण व्यवस्था में अपनी भागीदारी स्वयं स्फूर्त तरीके से होनी चाहिए। यह सर्व स्वीकृत है। इसमें कोई दबाव काम नहीं करता है। दबाव से अस्वीकृति बन जाती है।

बागड़िया जी ने सदस्यों की अपेक्षा के अनुरूप कार्यक्रमों और उनमें भागीदारी निश्चित करके उसकी सूचना सभी को दी। बाबा ने प्रस्ताव रखा कि वे प्रबोधकों के शिविर का संचालन करेंगे और अन्य स्थानों पर यदि उन्हें बुलाया जाता है तो वे एक्सपर्ट मुल्यांकन कर्ता के रूप में भाग लेंगे।

श्री रण सिंह आर्य ने पिछले दो दिनों में हुयी प्रस्तुतियों की समीक्षा की और कहा कि कार्यक्रम फैलाना ठीक नहीं है। एक जगह प्रमाणित हो जाने के बाद ही अगली जगह काम शुरू किया जाये। व्यवसाय के संबंध में हुयी चर्चा से वे संतुष्ट नहीं हैं। उत्पादित वस्तुओं की आवश्यकता पूरी तरह जाँची जानी चाहिए। तभी निर्णय लिया जाना चाहिए। बाजार को देखकर व्यवसाय तय नहीं करना चाहिए। स्वावलम्बन का स्वरूप व्यवस्था में स्पष्ट होना चाहिये। इसके मूल्यांकन की आवश्यकता है। हमें लगता है कि हम जागृति की पूर्णता में नहीं हैं। इसके लिए प्रयास की आवश्यकता है। बाबा से निवेदन है कि वे एक बार अपने संपूर्ण वांग्मय का पुनः मूल्यांकित कर लें तो अच्छा होगा। जीवन विद्या को विकल्प

करने की आवश्यकता है।

के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जो भी काम अभी तक हुए है, उसमें राष्ट्रीय समितियों की कोई भागीदारी नहीं है।

आर्यजी ने जीवन विद्या न्यास की भूमिका देते हुए कहा कि इस समय मैं न्यास के संयोजन का कार्य देख रहा हूँ, अध्यक्ष सजीव हैं। भाई गणेश को संयोजक बनाने हेतु प्रस्ताव रखा। अन्य व्यक्तियों, समितियों को उनके द्वारा बनाया जाये। ये समितियां उन्हें सौंपे गये दायित्वों को पूरा करें। वह राष्ट्रीय समिति, उपसमिति का गठन कर उत्तरदायित्व सौंपे।

उन्होंने आग्रह किया कि परिवार मानव पत्रिका के श्रद्धांजलि विशेषांक के लिए सत्य जी बारे में लेख आदि १५ अक्टूबर तक आ जाने चाहिये। इसके लिए दिल्ली का पता:

डा० सन्तोष, ५१ न्यू कैम्पस आई. आई. टी., हौजखास, नई दिल्ली-१६ फोन: (०११)६८६८९८०

पत्रिका के भविष्य के विषय में भी उन्होंने चिंता जताई।

पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक बनाने एवं उसे लागू करने में जल्द बाजी न करने का आग्रह किया। १६ अक्टूबर से ३० अक्टूबर तक गोविन्दपुर में इस संबंध में काम करने का कार्यक्रम तय किया गया। इसमें साहनी जी, वी. पी. शर्मा, सुशील, शिव, द्विवेदी जी, चौधरी जी व अन्य इच्छुक लोग भाग लेंगे। TLM (Teaching & Learning Material) तैयार होने के बाद बाबा उसका परीक्षण करेंगे।

पत्रिका सहयोग राशि- मिश्राजी, रायपुर, अमरकण्टक, चौधरी जी एक-एक अंको के प्रकाशन के खर्च की जिम्मेदारी ली। १००-१०० प्रतिमाह सहयोग राशि का प्रस्ताव भी रखा गया। अशोक शर्मा जी ने प्रस्ताव रखा कि एक निश्चित राशि जमा करा दी जाये। पत्रिका के लेख, रिपोर्ट आदि तैयार कर समय-२ पर भेजते रहने हेतु आग्रह किया गया। सदस्य संख्या बढ़ाने हेतु भी आग्रह किया गया। बाबा ने अपेक्षा की कि आर्य जी पत्रिका को समय पर ही निकालें। बाबा की इच्छा है कि चौधरी जी पत्रिका हेतु सामग्री विकसित करने का कार्य करें। मिश्रा जी से भी लेख भेजने का आग्रह किया गया। अशोक शर्मा जी को सहअस्तित्ववादी कविता, रचनायें, लिखने तथा साहनी जी को पत्रिका के लिए सामग्री लिखने का आग्रह बाबा ने किया। राजन महाराज से भी सहयोग की अपेक्षा की गई। बाबा ने भी सहयोग का आश्वासन दिया। गोबिन्दपुर द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों के लिए भी संसाधनों की आवश्यकता है, ऐसी सूचना गणेश जी ने दी। अशोक शर्मा जी ने कविता पाठ किया।

निम्न बातें प्रस्तावित की गई

१. बिजनौर में शिक्षण प्रशिक्षण शिविर   नव., दिस., जन., फर. में
३ महीने, ६ महीने और एक वर्ष का ।

२. पत्रिका का प्रकाशन बिजनौर से।

३. ५ वर्ष से कम बच्चों की शिक्षा व्यवस्था कैसी हो   अशोक जी

गणेश जी ने कहा जहाँ-२ जो भी काम हो रहा है, उत्साहवर्धक है मगर पूरा नहीं। कोई अधिमूल्यन या गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। जो काम हो रहा है उसका सही-सही मूल्यांकन करके कमियों को पूरा करने की जरुरत है। Condem करने या निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

निम्नलिखित कार्य अभी चल रहे हैं:

जीवन विद्या योजना-   सभी केन्द्रों पर शिविरों का काम चालु हो गया है प्रबोधको की कमी जरुर है।

शिक्षा का मानवीकरण   गोविन्दपुर का काम हमारी उपलब्धि है। झाबुआ में संभावनायें बनी है। काम कठिन है लेकिन आवश्यक है। Slips की संभावना न हो यह हमारी जिम्मेदारी है। झाबुआ में Pilot Project के रुप में और Block Level पर यह काम आदि कर पाये तो म०प्र० में आगामी ३ वर्षों में संभावनायें है।

बांदा में भी संभावनायें बनी है। इन्दौर, उज्जैन और देवास में भी ४-५ प्राइवेट स्कूल की मांग है।

ग्राम स्वराज्य योजना- इसके अन्तर्गत कोई ठोस काम हुआ हो ऐसा नहीं दिखता, मगर गोविन्दपुर में संभावनायें बनी है, ७ गावों में काम शुरु हुआ है। रामपुर और दो और गावों में संभावनायें है।

बांदा में भी शुरुवात हुयी है, ऐसा लगा कि बच्चों में ही काम करके इसे आगे बढाया जा सकता है।

झाबुआ में बाल्य क्षेत्र के अन्तर्गत कुछ प्रयास किये गये है परिणाम उत्साहवर्धक है।

संभावनायें प्रबल है। जहाँ-२ कमियां है उन्हें पूरा करने में अपनी सहभागिता निभाने की हमारी जिम्मेवारी है।

समझने का, जीने का और समझाने का तीनों काम साथ-२ चलना चाहिये।

बाबा ने बताया कि कई व्यक्तियों के लिए अभी कई मुद्दों पर समाधान होना शेष है। परस्परपूरकता विधि से ही संभव है। जीवन विद्या वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को जल्दी समझने में आयी है। बाकी लोगों को थोड़ी देर लगी। अभी जनसामान्य हेतु योग्य शैली की आवश्यकता है। शिक्षा के मानवीयकरण योजना [illegible] उत्साहित [illegible] समय का तकाजा है कि पूरी शिक्षा को इसी आधार पर चलाया जाय। शासन भी चाहता है कि शिक्षा से मानव का विकास हो। इस अवसर को पहचानकर इसका सदुपयोग करने की आवश्यकता है।

आज के युग में ताकत से नहीं, व्यापारिक विधि से दूसरे देश पर शासन करने की प्रथा शुरू हुआ है। अधिक पैसे वाले देश कम पैसे वाले देशों पर व्यापार शासन कर रहे है। राष्ट्रीय चरित्र के मामले मे सभी देश भ्रमित है। तमाम परिस्थितियां ऐसी बनी है, जिनमें राहत की आवश्यकता (कसमसाहट) महसूस की जा रही है। इसी राहत कार्य के लिए मै और जीवन विद्या समर्पित है। हम सब एक ही लक्ष्य के लिए प्रयासरत है। उम्मीद है आगे और भी कार्य होंगे और हम उत्साहित होंगे।

सिन्धु चाचा ने कहा कि सब कुछ देख लिया है। अब तो स्वराज्य देखने की इच्छा है। उन्होंने कहा कि मेरा विश्वास है कि शिक्षा का मानवीयकरण होगा और स्वराज्य आयेगा। कोई इसे रोक नहीं पायेगा। उन्होंने सम्मेलन की सफलता की बधाई दी।

निम्नलिखित कार्यक्रम तय किये गये-

आंवरी शिविर — प्रबोधक

१. १५ दिसंबर ९७ से २२ दिसंबर - बागड़िया जी
२. जनवरी ९८ से मार्च ९८ के बीच - बाबा, साधन जी
(फरवरी ९८ प्रस्तावित)
३. अप्रैल ९८ - श्री रणसिंह आर्य

दिल्ली शिविर

१. ४/११/१८/२५ अक्टू. ९७ मे एक- रणसिंह/शिवजी
२. नवं. ९७ (अन्तिम सप्ताह) - शिव
३. अक्टूबर ९७ (अन्तिम सप्ताह) - --

रायपुर शिविर

१. अप्रैल ९८ मे - रणसिंह आर्य

झाबुआ शिविर

१. २५ सितंबर ९७ से - शिव, वीरा
२. अक्टूबर मे - शिव, वीरा

बलिया शिविर

१. फरवरी - बागड़िया जी

कांकेर शिविर

१. २२ - २९ अक्टूबर - बाबा और साधन जी

बांदा शिविर

१. अक्टूबर ९७ - सुशील व बागड़िया जी
२. नवम्बर ९७ - सुशील
३. दिसम्बर ९७ - बाबा जी
४. जनवरी ९८ - बागड़िया जी
५. फरवरी ९८ - सुशील
५. मार्च ९८ - साधन जी, बाबा जी
६. अप्रैल ९८ - सुशील
७. मई ९८ - सुशील
८. जून ९८ - साधन जी
१०. जुलाई ९८ - बागड़िया जी
११. अगस्त ९८ - सुशील
१२. सितम्बर ९८ - साधन जी

उज्जैन शिविर

१. जनवरी/ फरवरी ९८ मे - बागड़िया जी

बिलासपुर शिविर

१. अक्टूबर १३ से २३ - श्री साधन जी
२. दिसम्बर २२ से २८ - श्री बागड़िया जी

प्रबोधक शिविर

१. १० जा. /फिर ([illegible] - बाबा संयोजक श्री [illegible]/ गोविन्दनार

२. ३१ मई/ जून ९८ अमरकंटक - [illegible]

सम्मेलन

१. २०-२२ सितंबर- झाबुआ.

प्रकल्प

१. लोक शक्ति -बिलासपुर- साधन जी, रानू भोगल, तेजी भोगल, राम मिलन, सुशील

२. भटगाँव केन्द्र -रायपुर- सोम, संकेत, अंजनी अग्रवाल

३. DPEP -झाबुआ- नागड़िया जी, सुशील, शिव, द्विवेदी जी

४. [illegible] -नन्दिनी नगर राजन [illegible], मिश्रा जी, साहनी जी

५. स्वास्थ्य संगम -गोविन्दपुर डा. [illegible], रणसिंह आर्य जी

६. मानवीय प्रबंधन संस्थान-कानपुर नागड़िया जी

पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तिका शिक्षण निर्देशिका, शिक्षण प्रशिक्षण

१. झाबुआ - शिव, सुशील, द्विवेदी जी एवं साथी अक्टूबर में
सुशील अक्टूबर अन्त

तैयारी के बाद

बलिया, कांकेर, बांदा भेज दिया जायेगा।

२. भिलाई में - साहनी जी, वी.पी. शर्मा

३. शिक्षण प्रशिक्षण

कांकेर, नागौद, बलिया के लिए .-गोविन्दपुर, [illegible]

संपादन

१. परिवार मानव पत्रिका के लिये।

२. गोविन्दपुर के द्वारा किये जाने वाले समन्वयन व शिविर के कार्यक्रम के लिये।

परिवार मानव पत्रिका

१. लेख, कवितायें।

२. सदस्य बनाना।

मानवीय संविधान का प्रारूप

१. साहनी जी एवं सहयोगी